अध्याय 24

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अवधारणाएँ
(Concept of International Trade)

प्रस्तावना –

वैश्वीकरण के इस युग में ऐसा कोई देश नहीं होगा जो अपने नागरिकों की जरूरतों की पूर्ति अपने उपलब्ध संसाधनों द्वारा कर लेता हो। लोगों में बढ़ती उपभोक्तावादी प्रवृत्ति किसी भी देश को अन्य देशों से वस्तुओं और सेवाओं के लेन–देन के लिए आकृष्ट करती है। ऐसे में किसी देश की बंद अर्थव्यवथा (Closed Economy) की कल्पना भी बेमानी होगी। आज का युग 'खुली अर्थव्यवस्था' (Open Economy) का युग है। प्रत्येक देश अपनी जनसंख्या की जरूरतों के लिए विभिन्न देशों के साथ व्यापार और अन्य आर्थिक लेन–देन में संलग्न हैं।

आइये हम इसके लिए सर्वप्रथम खुली और बंद अर्थव्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं।

बंद अर्थव्यवस्था –

यह एक ऐसे देश की अर्थव्यवस्था कही जा सकती है, कि जो दूसरे देश से कोई आर्थिक लेन–देन अथवा व्यापार नहीं करती है। इसके अन्तर्गत केवल देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का ही उपयोग किया जाता है।

खुली अर्थव्यवस्था –

यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है, जिसमें अन्य देशों के साथ वस्तुओं और सेवाओं का परस्पर लेन–देन तथा वित्तीय परिसम्पत्तियों का भी व्यापार किया जाता है।

उदाहरण के लिए भारत में हम अन्य देशों से आयातित अनेक वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग करते हैं। इसी प्रकार हमारे उत्पादन का कुछ भाग विदेशों को निर्यात भी किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ –

सामान्यतः व्यापार का अर्थ वस्तु और सेवाओं के क्रय विक्रय से होता है। व्यापार आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय होता है। आन्तरिक अथवा घरेलू व्यापार किसी भी देश की भौगोलिक सीमा के भीतर विभिन्न क्षेत्रों के बीच में होता है। उदाहरण के लिए दक्षिण भारत से केला, चावल और नारियल समूचे भारत में आन्तरिक व्यापार के तहत भेजे जाते हैं। इसी प्रकार कश्मीर में उत्पादित सेव, मसाले, केसर इत्यादि भी ऐसे ही उदाहरण हैं। इसके विपरीत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दो अथवा दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता है। किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के बाहर होने वाला व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। उदाहरणार्थ भारत और अमेरिका के बीच होने वाला व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। इसे सरल भाषा में विदेशी व्यापार भी कहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता–

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से समझ सकते हैं–

1. सभी देश सभी प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन समान रूप से करने में सक्षम नहीं होते हैं, इसलिए आवश्यकता की वस्तुओं के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। उदाहरण के लिए तेल की आवश्यकता सभी देशों को होती है, किन्तु यह कुछ ही क्षेत्र में सीमित है। अतः इसका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है।
2. विश्व में साधनों जैसे उर्वरा भूमि, खनिज सम्पदा, वनसम्पदा इत्यादि का असमान वितरण होता है। जलवायु भी असमान रहती है। उत्पादन के साधनों के बीच स्थानापन्न पूर्ण नहीं होता है। अतः प्रत्येक देश उस वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण करता है, जो साधन वहाँ प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इससे उसकी उत्पादन लागत कम होती है। लाभ अर्जित करने के लिए वस्तुओं का निर्यात करता है। इसके विपरीत अल्प संसाधनों और इनकी ऊँची कीमतों के कारण ऐसी वस्तुओं का दूसरे देशों से आयात करता है। इस प्रकार वह अपनी उत्पादन लागत कम करने का प्रयास करता है और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से लाभ अर्जित करता है।
3. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से आधुनिक टैक्नोलोजी प्राप्त होती है जिससे विकासशील और पिछड़े देशों का विकास सम्भव होता है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से घरेलू उद्योगों में भी प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से अधिक लाभ कमाने के लिए वे अपने उत्पाद की गुणवत्ता और विक्रय मात्रा दोनों में वृद्धि करते हैं।
5. वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त आगम, सकल राष्ट्रीय उत्पाद का बड़ा अंश होता है। सभी विकासशील

देशों के विकास में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एक उत्तरदायी घटक रहा है।

महत्त्व

प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को बताती है–

जेकब वाइनर के अनुसार "विदेशी व्यापार कुछ अंश तक विशिष्टीकरण को जन्म देता है।"

वाल्टर क्रूसे "अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अधिक मनुष्यों को जीने की अनुमति देता है, विभिन्न रुचियों को प्रदान करके जनता को उच्च जीवन स्तर का आनन्द देता है जो शायद उसकी अनुपस्थिति में सम्भव नहीं होता।"

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्व को निम्न बिन्दुओं से समझाया गया है–

1. उपभोक्ता, उत्पादक और विनियोगकर्त्ता को अधिक वस्तुओं के चयन का अवसर प्रदान करता है।
2. प्राकृतिक संसाधन का पूर्ण उपयोग होने में सहायक होता है।
3. प्रत्येक देश को विकास करने का समान अवसर प्रदान करता है।
4. प्राकृतिक आपदाओं में आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराने में सहायक होता है।
5. विकासशील देशों को वित्तीय सुविधा और आधुनिक टैक्नोलॉजी प्राप्त होने से तीव्र औद्योगीकरण की सम्भावनाएं बढ़ती हैं।
6. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से देशों में परस्पर सद्भावना बढ़ती है।

व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन

व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन में उल्लेखनीय अन्तर है। व्यापार संतुलन, भुगतान संतुलन का एक अंश है। प्रत्येक देश वस्तुओं और सेवाओं का आयात निर्यात करता है, कुछ मदें दृश्य होती है और कुछ अदृश्य। दृश्य वस्तुओं से तात्पर्य है भौतिक वस्तुएं, जिन्हें देखा और मापा जा सकता है। इन वस्तुओं के आयात और निर्यात मूल्यों को व्यापार सन्तुलन में शामिल किया जाता है। इस प्रकार व्यापार संतुलन केवल दृश्य वस्तुओं को ही शामिल करता है। यदि किसी देश के आयातों की तुलना में निर्यात अधिक होते हैं तो व्यापार सन्तुलन अनुकूल होता है। इसके विपरीत यदि निर्यातों की तुलना में आयात अधिक होते हैं तो व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल होता है।

भुगतान सन्तुलन एक व्यापक अवधारणा है इसमें दृश्य और अदृश्य दोनों ही प्रकार की मदें शामिल होती है। अदृश्य मदों में सेवाएं जैसे बैकिंग, बीमा, तकनीकी ज्ञान आदि होती हैं। इनका भुगतान देशों के मध्य होता है। किन्तु बन्दरगाहों पर उनका कोई लेखा नहीं होता है। इसके अतिरिक्त इसमें पूंजी खाते को भी शामिल किया जाता है। कुछ प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों ने भुगतान संतुलन को इस प्रकार से परिभाषित किया है –

बोसोडर्स्टन के अनुसार – "भुगतान संतुलन किसी देश के लिए अन्तर्राष्ट्रीय लेन देन में प्राप्तियों और भुगतान को दर्ज करने

तालिका 24.1 भुगतान सन्तुलन लेखा

क्रेडिट (प्राप्तियाँ)			**डेबिट (भुगतान)**	
चालू लेखा				
क्र.स.	मदें	रु. करोड़	मदें	रु. करोड़
1.	वस्तुओं का निर्यात	300	8. वस्तुओं का आयात	400
2.	सेवाओं का निर्यात	100	9. सेवाओं का आयात	200
3.	विदेशी विनियोगों से आय	200	10. विदेशी विनियोगों से व्यय	100
4.	यूनिलैटरल (एक पक्षीय) प्राप्तियाँ (उपहार, दान आदि)	100	11. यूनिलैटरल (एकपक्षीय) भुगतान	100
		700		800
पूँजी खाता				
5.	दीर्घकालीन उधार लेना	200	12.दीर्घकालीन उधार देना	100
6.	अल्पकाल उधार लेना	200	13. अल्पकाल उधार देना	100
7.	स्वर्ण / परिसम्पत्ति विक्रय	100	14 स्वर्ण / परिसम्पत्ति खरीद	100
		500	15. अशुद्धियाँ और भूलचूक	300 100
	कुल योग	1200		1200

का तरीका मात्र है।"

भुगतान संतुलन को निम्न काल्पनिक तालिका के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

उपरोक्त तालिका में व्यापार सन्तुलन में 100 करोड़ का घाटा दर्शाया गया है। वस्तुओं का निर्यात 300 करोड़ रुपये है, जबकि वस्तुओं का आयात 400 करोड़ रुपये है। किन्तु भुगतान सन्तुलन के दोनों पक्ष (क्रेडिट और डेबिट) 1200 करोड़ रुपये है। भुगतान संतुलन संतुलित है, यह सदैव संतुलित रहता है क्योंकि इसमें दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार की वस्तुएँ शामिल होती हैं।

विदेशी विनिमय दर का अर्थ

सेयर्स के अनुसार, ''चलन मुद्राओं के परस्पर मूल्यों को ही विदेशी विनिमय दर कहा जाता है।''

हेन्स के अनुसार, ''विनिमय दर एक मुद्रा की दूसरी मुद्रा के रुप में व्यक्त की गई कीमत है।''

सेयर्स और हेन्स की परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि विनिमय दर वह दर है जिस पर एक करेन्सी दूसरी करेन्सी में परिवर्तित की जाती है। जैसे भारत का एक रुपया = 0.015 डॉलर के बराबर है। अथवा 1 यू.एस. डॉलर = 68.26 भारतीय रुपये। यदि कोई भारतीय पर्यटक अमरीका यात्रा के उद्देश्य से जाता है तो वहाँ अपनी दैनिक जरुरतों को पूरा करने के लिए भारतीय मुद्रा (रुपये) को डॉलर में बदलवाना होगा, 1 डॉलर के लिए उसे 68.26 रुपये देने पडेंगे। विनिमय विदेशी वर विनिमय बाजार में तय होती है।

विदेशी विनिमय बाजार – जहाँ दो अथवा अधिक देशों के मध्य उनकी मुद्राओं का विनिमय होता है। इस बाजार के प्रमुख ऐजेंट व्यावसायिक बैंक, अधिकृत डीलर और मुद्रा प्राधिकारी हो सकते हैं।

विनिमय दर कई प्रकार की होती हैं, जैसे अग्रिम, तत्काल, अनुकूल, प्रतिकूल, स्थिर और अस्थिर विनिमय दर।

विनिमय दर का निर्धारण

अर्थशास्त्रियों द्वारा विनिमय दर के निर्धारण के लिए मांग–पूर्ति सिद्धान्त, क्रय शक्ति समता सिद्धान्त, भुगतान शेष सिद्धान्त और टकसाल दर समता सिद्धान्त आदि प्रतिपादित किए गए हैं।

मांग पूर्ति सिद्धान्त

जिस प्रकार बाजार में कीमतों का निर्धारण उनकी मांग और पूर्ति के द्वारा होता है उसी प्रकार विदेशी विनिमय बाजार में भी विनिमय दर का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। एक सरल उदाहरण द्वारा हम इसे समझने का प्रयास कर सकते हैं। जैसे भारत में विदेशी विनिमय की मांग (डॉलर) इसलिए होती है कि भारत अमेरिका से वस्तुएँ एवं सेवाएँ आयात करता है। भारत इसके लिए अमरीका को पूँजी हस्तान्तरण करता है। जिसके बदले अमेरीकी डॉलर उपलब्ध कराता है क्योंकि आयातों का भुगतान डॉलर में किया जाता है।

डॉलर की मांग के वक्र का ढाल ऋणात्मक होता है अर्थात् विनिमय दर जितनी कम होगी, भारत में डॉलर की मांग उतनी ही अधिक होगी। अर्थात् भारत में अमरीका की वस्तुओं और सेवाओं के दाम सस्ते हो जाएंगे। आयात मांग की लोच मांग वक्र को प्रभावित करती है।

पूर्ति – जब भारत वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करता है तो अमेरिका से भारत को पूंजी भेजी जाती है। डॉलर के बदले रुपये दिए जाते हैं क्योंकि अमेरिका भारत को भुगतान रुपये में करता है। पूर्ति वक्र धनात्मक होता है जो प्रत्यक्ष सम्बन्ध को बताता है अर्थात् जैसे–जैसे विनिमय दर बढ़ती है तो रुपये की पूर्ति बढ़ जाती है। पूर्ति वक्र का ढाल पूर्ति की लोच द्वारा निर्धारित होता है।

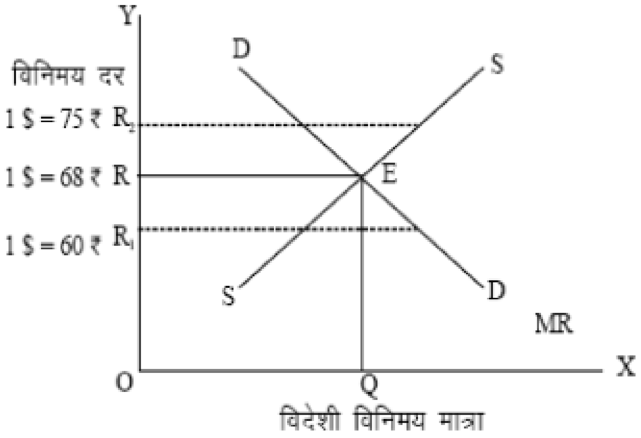

रेखाचित्र 24.1

चित्र में सन्तुलन E बिन्दु पर है जहाँ DD विदेशी विनिमय की मांग SS विदेशी विनिमय की पूर्ति के बराबर है। विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति OQ होती है। विनिमय दर OR है। + 68 निर्धारित होती है। यदि विनिमय दर OR_2 हो तो विदेशी विनिमय की पूर्ति मांग से अधिक होगी परिणाम स्वरूप विनिमय दर घटेगी और E पर साम्य होंगे। इसके विपरीत OR_1 पर विदेशी विनिमय की मांग विदेशी विनिमय की पूर्ति से अधिक है, जिससे विनिमय दर बढ़कर पुनः सन्तुलन E पर स्थापित होगा। भुगतान सन्तुलन इन लोचदार विनिमय दरों के कारण सन्तुलन की स्थिति में रहता है।

इस प्रकार विनिमय दरों में परिवर्तन से विदेशी विनिमय की मांग या पूर्ति में भी परिवर्तन आता है। इसके अन्य कई आर्थिक कारण भी उत्तरदायी हो सकते हैं जैसे आयात और निर्यात की मात्रा, देश की पूंजी का प्रवाह, बैंक दर, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में अनिश्चितता और देश का राजनैतिक वातावरण।

1. पाल एन्जिग के अनुसार अवमूल्यन से तात्पर्य मुद्राओं के अधिकृत समताओं में कमी करने से है।

अवमूल्यन (Devaluation) *और अधिमूल्यन* (Revaluation)

अवमूल्यन और अधिमूल्यन किसी देश के भुगतान संतुलन को समायोजित के आवश्यक उपकरण होते हैं।

अवमूल्यन किसी देश की सरकार द्वारा अपनी मुद्रा को विदेशी मुद्रा के सापेक्ष में मूल्य ह्रास करने की एक प्रक्रिया है। अवमूल्यन का अर्थ होता है जब कोई देश अपनी मुद्रा का बाह्य मूल्य कम करता है। सरकार ऐसा व्यापार घाटे को कम करने के लिये करती है, जिससे देश के आयात महंगे और निर्यात सस्ते हो जाते हैं। इस प्रकार सरकार अवमूल्यन के द्वारा भुगतान असंतुलन को दूर करने का प्रयास करती है।

अधिमूल्यन भी सरकार द्वारा भुगतान संतुलन को समायोजित करने के लिए अपनाया जाने वाला नीतिगत उपकरण है, जिससे देश की मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा के सापेक्ष में बढ़ा दिया जाता है। ऐसा करने से देश के निर्यात महंगे हो जाते हैं और आयात सस्ते हो जाते हैं। विदेशी मुद्रा की तुलना में रुपया महंगा हो जाता है और इसके द्वारा विदेशी व्यापार में आधिक्य को समाप्त किया जा सकता है।

अवमूल्यन और अधिमूल्यन दोनों ही मौद्रिक स्थिर विनिमय दर प्रणाली के अन्तर्गत किए जाते हैं। अधिमूल्यन अगर अस्थाई (तिरती) विनिमय दर प्रणाली के अन्तर्गत होता है तो उसे मुद्रा मूल्य वृद्धि (appreciation) कहते हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- दो या दो से अधिक देशों के मध्य वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से उपभोक्ता, उत्पादक और विनियोगकर्त्ता में वस्तुओं के चयन का विस्तार होता है।
- व्यापार संतुलन वस्तुओं (दृश्य) के आयात और निर्यात को शामिल करता है।
- भुगतान संतुलन में दृश्य और अदृश्य दोनों ही मदें शामिल होती हैं।
- विनिमय दर एक मुद्रा की दूसरी मुद्रा के रुप में व्यक्त कीमत होती है।
- विदेशी विनिमय की मांग और विदेशी विनिमय की पूर्ति बराबर होने पर विनिमय दर का निर्धारण होता है।
- अवमूल्यन से तात्पर्य है जब कोई देश अपनी मुद्रा की बाह्य मुद्रा कम करता है।
- अपने देश की मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा के सापेक्ष में बढ़ा देना अधिमूल्यन कहलाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. विदेशी विनिमय बाजार को परिभाषित किया जा सकता है जहाँ–
   (अ) वस्तु का लेन–देन होता है
   (ब) विनिमय मुद्रा का लेन–देन होता है
   (स) साधनों का लेन–देन होता है
   (द) सेवाओं का लेन–देन होता है
2. निम्न में से कौनसी स्थिति व्यापार घाटे को दर्शाती है –
   (अ) आयात > निर्यात (ब) निर्यात = आयात
   (स) आयात < निर्यात (द) उपरोक्त कोई नहीं
3. एक देश द्वारा अपनी मुद्रा के बाह्य मूल्य को कम करने को कहते हैं –
   (अ) मूल्यह्रास (ब) अवमूल्यन
   (स) अधिमूल्यन (द) मुद्रा स्फिीति
4. व्यापार संतुलन में शामिल होते हैं –
   (अ) सेवाओं का आयात
   (ब) सेवाओं का निर्यात
   (स) परिसम्पत्ति का आयात
   (द) वस्तुओं का आयात व निर्यात
5. यदि 1 डॉलर का मूल्य 65 रुपये से बदलकर 60 रु. कर दिया जाए तो यह कहलाएगा –
   (अ) अधिमूल्यन (ब) अवमूल्यन
   (स) मूल्यह्रास (द) मूल्य वृद्धि

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का क्या अर्थ है?
2. विदेशी विनिमय बाजार का अर्थ बताइये।
3. व्यापार का क्या अर्थ है?
4. व्यापार घाटा कब होता है?
5. विदेशी व्यापार का कोई एक महत्व बताइये।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. अवमूल्यन को परिभाषित कीजिए।
2. अदृश्य मदें क्या होती हैं?
3. विनिमय दर का अर्थ बताइए।
4. दृश्य वस्तुओं से क्या अभिप्राय है?
5. बंद अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. विदेशी विनिमय दर के निर्धारण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाइये।
2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अर्थ बताइये। इसकी क्यों आवश्यकता होती है?
3. अवमूल्यन व अधिमूल्यन में अन्तर बताइये।
4. 'भुगतान संतुलन, व्यापार संतुलन से अधिक व्यापक अवधारणा है' स्पष्ट कीजिए।
5. एक काल्पनिक उदाहरण द्वारा भुगतान संतुलन की विभिन्न मदों को समझाइए।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
ब	अ	ब	द	अ